उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया: व्याख्या के आधार

अध्याय 11

एक-एक व्यक्ति के आधुनिक अनुप्रयोग

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना........1
विविधता........2
बाइबल के निर्देश........3
पुराना नियम........3
नया नियम........6
लोग और परिस्थितियाँ........8
उच्च निर्देश........8
निचली श्रेणी के निर्देश........9
बुद्धि........11
अगुवे........12
पुराना नियम........12
नया नियम........13
समुदाय........15
पुराना नियम........15
नया नियम........17
उपसंहार........20

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया:
व्याख्या के आधार

अध्याय ग्यारह

एक-एक व्यक्ति के आधुनिक अनुप्रयोग

प्रस्तावना

एक कहानी किसी युवा पादरी के बारे में बताई जाती है, जो सब लोगों के जाते समय अपने गिरजाघर के द्वार पर खड़ा होता था और उनका अभिवादन करता था। अब, उसकी कलीसिया के अधिकांश लोग विनम्रता से मुस्कुराते और अपने मार्ग पर चले जाते थे। लेकिन पंक्ति के अंत में एक ऐसा वृद्ध व्यक्ति होता था जिसने हमेशा से वही बात कही जो उसके मन में होती थी।

"जवान," उसने शिकायत की। "मुझे तुम्हारे उपदेश से एक गंभीर समस्या है।"

"वह क्या है?" पादरी ने पूछा।

"मुझे यह जानने की आवश्यकता है कि मेरे जीवन के बारे में परमेश्वर का वचन क्या कहता है, लेकिन तुमने कभी भी कुछ ऐसा नहीं कहा जो मेरे लिए लागू होता है।"

खैर, कभी न कभी, हम में से अधिकांश लोगों ने ऐसे उपदेश सुने हैं जो उन व्यक्तिगत आवश्यकताओं को संबोधित करने में विफल होते हैं जिनका हम सामना करते हैं। और हम सभी को प्रोत्साहन, व्यावहारिक मार्गदर्शन और सुधार की आवश्यकता है जो बाइबल के पास हमें प्रदान करने के लिए है। इसलिए, जितना भी हम सामान्यताओं या सैद्धांतिक विषयों के साथ जुड़े रहना चाहें. हमें बस यह सीखना चाहिए कि पवित्र शास्त्र को व्यावहारिक तरीकों में स्वयं अपने जीवनों के लिए और दूसरों के जीवनों के लिए कैसे लागू किया जाए।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह ग्यारहवां अध्याय है: *व्याख्या के आधार*, और हमने इसका शीर्षक रखा है "एक-एक व्यक्ति के लिए आधुनिक अनुप्रयोग।" इस अध्याय में, हम देखेंगे कि एक-एक व्यक्ति के रूप में हमें दूसरों के लिए और अपने लिए पवित्र शास्त्र को कैसे लागू करना चाहिए।

जैसा कि हमने पहले के अध्यायों में देखा है, कि जब भी हम बाइबल को अपने समय में लागू करते हैं, तो हमें पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं और आधुनिक श्रोताओं के बीच मौजूद तीन प्रकारों की दूरी को ध्यान में रखना चाहिए: युगांतरिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत दूरियाँ।

बड़े पैमाने पर, हमें उन ईश्वरीय-ज्ञान के विकासों का पता लगाना चाहिए जो उस समय हुए जब बाइबल के इतिहास ने एक महान युग से दूसरे में प्रवेश किया। थोड़े छोटे पैमाने पर, हमें बाइबल के समय में संस्कृतियों के लिए परमेश्वर के डिजाइन और आधुनिक संस्कृतियों के लिए उसके डिजाइन के बीच समानताओं एवं अंतरों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। और इन रूपरेखाओं के भीतर, हमें पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं और आधुनिक श्रोताओं के बीच व्यक्तिगत समानताओं एवं अंतरों पर भी ध्यान देना चाहिए। इस अध्याय में, जब हम यह विचार करते हैं कि पवित्र शास्त्र को आज व्यक्तियों की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को कैसे प्रभावित करना चाहिए तो हम मुख्य रूप से आधुनिक अनुप्रयोग के इस अंतिम आयाम पर दृष्टि डालेंगे।

> परमेश्वर हमारे जीवन में हर चीज़ को प्रभावित करने के उद्देश्य से अपने वचन का इरादा करता है, जिस तरह हम फिल्मों को देखते और गाने सुनते हैं, और जिन दोस्ताना मुलाकातों में हम जाते हैं। जिस तरह हम सूर्यास्त और पाप को देखते हैं, वे सभी उस तरह से प्रभावित होने के लिए इरादातन किए गए हैं जिनमें परमेश्वर ने स्वयं को हमारे लिए प्रकट किया है। और इसको हमारे दिमागों, हमारे हृदयों,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> हमारे कार्यों पर प्रभाव डालने की आवश्यकता है। बाइबल को हमारे जीवन को संतृप्त करने और हमें बाइबल संबंधी ऐसी समझ देनी चाहिए, जहाँ हम हर दिन हर मिनट परमेश्वर के विचारों को उसके अनुसार सोचते हैं। इसे अंततः अंतर्ज्ञानी और सहज बनने की आवश्यकता है, लेकिन हमारे जीवन में बहुत समग्र रूप से प्रभाव डालना ही बाइबल का उद्देश्य है।
>
> — डॉ. के. एरिक थोइनेस

एक-एक व्यक्ति के लिए आधुनिक अनुप्रयोग की चर्चा करने के लिए कई तरीके हैं, लेकिन इस अध्याय में, हम दो मुख्य विषयों के साथ चर्चा करेंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र के हमारे व्यक्तिगत अनुप्रयोग में विविधता को ठहराया है। और दूसरा, हम यह पता लगाएंगे कि कैसे परमेश्वर ने हमारे लिए बाइबल के हमारे अनुप्रयोग में, स्वयं के लिए और दूसरों के लिए ज्ञान प्राप्त करने के तरीके प्रदान किए हैं। आइए व्यक्तिगत अनुप्रयोग में विविधता के साथ शुरू करते हुए, इनमें से प्रत्येक विषय को देखें।

विविधता

किसी न किसी समय पर, हम में से अधिकांश ने किसी प्रकार की मशीन या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के संचालन के लिए कोई निर्देश पुस्तिका पढ़ी है। अब, संचालन निर्देश पुस्तिका आमतौर पर सरल प्रक्रियाओं के हर एक विवरण का वर्णन करती है ताकि प्रत्येक व्यक्ति बिल्कुल वही काम करे: “ऐसा करो। “ऐसा करो। ऐसा करो,” और सब कुछ उसी तरह कार्य करेंगे जैसा इसे चाहिए था। लेकिन क्या आप किसी व्यक्ति से खेती, परिवार का पालन, या व्यवसाय चलाने जैसे विषयों पर एक विस्तृत निर्देश पुस्तिका लिखने की कल्पना कर सकते हैं? बेशक नहीं। ये कार्य चरणबद्ध तरीके से वर्णित किए जाने के लिए बहुत जटिल हैं। और जब लोग विभिन्न परिस्थितियों का सामना करते हैं तो विभिन्न लोगों को उन्हें अलग-अलग तरीकों से करना चाहिए।

कई बार हम ऐसा चाह सकते हैं कि बाइबल ऐसी निर्देश पुस्तिका के जैसे होती जो हर एक व्यक्ति के अनुसरण करने के लिए विशिष्ट चरणों को बताती। यह निश्चित रूप से परमेश्वर के वचन के व्यक्तिगत अनुप्रयोग को बहुत आसान बना देगी। लेकिन बाइबल से परिचित हर कोई जानता है कि यह ऐसा नहीं करती है। इसके बजाय, बाइबल, कल्पना के कुछ सबसे जटिल मुद्दों को संबोधित करती है — जो कि चरणबद्ध निर्देशों के लिए बहुत अधिक जटिल हैं। और इससे भी अधिक, बाइबल को कई विभिन्न लोगों द्वारा उपयोग में लाने के लिए अलग-अलग परिस्थितियों में डिजाइन किया गया था। इन कारणों के लिए, पवित्र शास्त्र को विभिन्न तरीकों से अलग-अलग लोगों पर लागू करने के लिए लिखा गया था।

व्यक्तिगत अनुप्रयोग में विविधता को समझने के लिए, हम पहले स्वयं बाइबल के निर्देशों के भीतर विविधता पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम देखेंगे कि इन विभिन्न निर्देशों को विभिन्न लोगों और परिस्थितियों में अलग-अलग तरीकों से क्यों लागू किया जाना चाहिए। आइए पहले बाइबल के निर्देशों की विविधता पर विचार करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल के निर्देश

जैसा कि हमने कुछ समय पहले सुझाव दिया था, चरणबद्ध निर्देश पुस्तिका के विपरीत, खेती, परिवार, व्यवसाय और इन्हीं के जैसों पर पुस्तकें आमतौर पर अपने पाठकों को व्यापक से लेकर विशिष्ट तक, कई निर्देश प्रदान करते हैं। आमतौर पर, इस प्रकार की पुस्तकें कुछ सार्वभौमिक सिद्धांतों की पहचान करती हैं, जिन्हें हर किसी को सभी परिस्थितियों में मानना चाहिए। वे कुछ सामान्य दिशानिर्देशों को भी देते हैं जो अधिकांश परिस्थितियों पर लागू होते हैं। इसके अलावा, वे अक्सर विशिष्ट परिस्थितियों से निपटने के लिए निर्देशों का वर्गीकरण प्रदान करते हैं, जो कि समय-समय पर उत्पन्न हो सकते हैं। अन्त में, इस प्रकार की पुस्तकों में अक्सर व्यक्ति-अध्ययन शामिल होते हैं जो सफलता और असफलता के उदाहरणों को दर्शाते हैं।

कई मायनों में, पवित्र शास्त्र निर्देशात्मक विविधता की एक ही श्रेणी को प्रतिबिंबित करते हैं। वे हर समय सभी के द्वारा पालन करने के लिए कुछ सार्वभौमिक सिद्धांतों को प्रदान करते हैं, कई परिस्थितियों में अनेक लोगों के लिए सामान्य दिशानिर्देश, विशेष लोगों और परिस्थितियों के लिए विशिष्ट निर्देश, और ऐसे लोगों के उदाहरण जो पवित्र शास्त्र के निर्देशों का पालन करने में सफल या असफल रहे हैं।

दो तरीकों से बाइबल के निर्देशों की इस श्रेणी को देखने में हमें मदद मिलेगी। सबसे पहले, हम देखेंगे कि पुराने नियम में इस तरह के निर्देश कैसे प्रकट होते हैं, और फिर हम इस बात पर विचार करेंगे कि निर्देशों की यह श्रेणी नए नियम में भी कैसे प्रकट होती है। आइए पुराने नियम के साथ शुरू करें।

पुराना नियम

जैसा कि यह एकदम अव्यवहारिक है, आधुनिक पाठकों की अक्सर यह धारणा होती है कि परमेश्वर ने हर एक इस्राएली से यह अपेक्षा की थी कि वह बाइबल की सभी व्यवस्थाओं और शिक्षाओं को उत्पत्ति से लेकर मलाकी तक याद करे और फिर एक पल के नोटिस में इन निर्देशों का लागू करने के लिए तैयार रहें। लेकिन पुराने नियम में नियमों की सूची किसी के भी याद करने के लिए इतनी लंबी थी, कि उन सभी को मानना तो बहुत दूर की बात थी। और इस चुनौती से निपटने के लिए, इस्राएल में यहूदी गुरुओं (रब्बी) ने पुराने नियम के निर्देशों की प्राथमिकताओं को समझने की कोशिश की। किन आदेशों को हर किसी को हर परिस्थिति में ध्यान में रखने की आवश्यकता थी? किन निर्देशों को जीवन के कई क्षेत्रों में, लेकिन सभी में नहीं लागू करने की आवश्यकता है? कौन से आदेश इतने विशिष्ट थे कि उन्हें सिर्फ कभी-कभार ही याद किया जाना था? कुछ यहूदी गुरुओं ने एक तरीके से और अन्यों ने दूसरे तरीके से तर्क दिया था। लेकिन वे सभी जानते थे कि प्राथमिकताएं स्थापित करना आवश्यक था। मत्ती 22:36 में, पुराने नियम की शिक्षाओं को प्राथमिकता देने के के प्रयासों ने व्यवस्था के एक विशेषज्ञ को यीशु से यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया:

> हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है? (मत्ती 22:36)।

यीशु ने 37-40 पदों में उत्तर दिया:

> तू अपने परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं (मत्ती 22:37-40)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस सुप्रसिद्ध परिदृश्य में, यीशु ने अपने अनुयायियों को बाइबल की सभी आज्ञाओं पर अपना आधिकारिक दृष्टिकोण बताया। व्यवस्थाविवरण 6:5 से "तू अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रख" वाली आज्ञा की पहचान उसने व्यवस्था के सर्वोच्च नियम के रूप में की। और बिना किसी के पूछे, उसने तुरंत दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा को जोड़ा: लैव्यव्यवस्था 19:18 से "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" उसके दृष्टिकोण से, ये दोनों आज्ञाएँ बाइबल के प्रत्येक अन्य निर्देशों के ऊपर प्राथमिकता रखते हैं।

निश्चित रूप से, स्वयं परमेश्वर और परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मानवता, बाइबल में बहुत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन यह याद रखने में मदद मिलती है कि यीशु ने इन दोनों आज्ञाओं को एक साथ रखा क्योंकि वे एक ही जैसे ध्यानकेंद्रण को साझा करते हैं। ये दोनों प्रेम के विषय में बात करते हैं। सबसे बढ़कर, हमें परमेश्वर से प्रेम और अपने पड़ोसी से प्रेम करना है। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने इन आज्ञाओं को अन्य सभी पर प्राथमिकता दी। वे हृदयों के उन सबसे गहन विषयों — व्यवहारों, प्रतिबद्धताओं, प्रेरणाओं और लक्ष्यों से संबंध रखते हैं जिनकी अपेक्षा परमेश्वर अपने लोगों से करता है। फलस्वरूप, यीशु के दृष्टिकोण से, परमेश्वर के लिए प्रेम और पड़ोसी के लिए प्रेम पुराने नियम में सार्वभौमिक सिद्धांत हैं, ऐसी आज्ञाएँ जिनका पालन प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी क़ीमत पर करना है।

> यीशु से व्यवस्थापक द्वारा पूछा गया था, "बाइबल में कौन सी सबसे बड़ी आज्ञा है?" और उसने उत्तर दिया — और यह बहुत ही महत्वपूर्ण उत्तर है — "बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है: तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।" और फिर उसने कहा, "और उसी के समान यह दूसरी भी है: कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।" तो, स्पष्ट रूप से ये दो महत्वपूर्ण आज्ञाएँ हैं। उसने उन्हें बराबर नहीं बनाया। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। हमारी पहली प्रतिबद्धता परमेश्वर को जाती है। वह हमारा सृष्टिकर्ता, हमारा उद्धारकर्ता है। वही हमारी ढाल और हमारा बहुत बड़ा प्रतिफल है। सब कुछ परमेश्वर पर केंद्रित है। और इसलिए, हमें अपने पूरे मन से परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, और यह हर दिन सर्वोच्च प्राथमिकता है। लेकिन यीशु ने इसे यहीं पर समाप्त नहीं किया। उसने यह नहीं पूछा था, कि "शीर्ष दो आज्ञाएँ क्या हैं?" व्यवस्थापक ने पूछा, कि "कौन सी आज्ञा सबसे बड़ी है?" लेकिन यीशु ने निश्चित रूप से उस दूसरी आज्ञा को दिया, और वह यह कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। और इसलिए दोनों आपस में जुड़े और संबंधित हैं। हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए लोगों से प्रेम किए बिना परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते हैं, और विशेषकर उन लोगों से जिन्हें छुड़ाया और परमेश्वर के परिवार में लेपालक बनाया गया है।
>
> — डॉ. एन्ड्रयू डेविस

ये दो आज्ञाएँ यीशु के लिए इतनी महत्वपूर्ण थीं कि उसने साथ में जोड़ा, "ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं — संपूर्ण पुराने नियम को संदर्भित करने के तरीके — का आधार हैं।" अब, हमें यहाँ पर सावधान रहना होगा क्योंकि कई व्याख्याकारों ने इसका अर्थ यह निकाला है कि यीशु के अनुयायियों को परमेश्वर और पड़ोसी के लिए प्रेम के सिवाय पुराने नियम के सभी निर्देशों को छोड़ देना या उनकी अवहेलना करनी चाहिए। लेकिन सत्य इसके ठीक उलट है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

न सिर्फ मत्ती 2 में यीशु ने दो सबसे बड़ी आज्ञाओं की पहचान की थी, बल्कि मत्ती 5:19 में, उसने अपने अनुयायियों को यह भी देखना सिखाया, जिसे उसने “छोटी से छोटी” आज्ञा कहा। उसने जो वहाँ पर कहा उसे सुनिए:

> इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा (मत्ती 5:19)।

यह पद और अन्य अनुच्छेद स्पष्ट करते हैं कि यीशु के अनुयायियों को सबसे छोटी से लेकर सबसे बड़ी तक, सभी आज्ञाओं को मानना था।

इसके अलावा, मत्ती 23:23 में, जब यीशु ने फरीसियों को फटकारा, तो उसने भी सर्वोच्च और निचली श्रेणी के बीच निर्देशों के फैलाव को माना:

> हे कपटी ... ! तुम पोदीने, और सौंफ, और जीरे का दसवाँ अंश तो देते हो , परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते (मत्ती 23:23)।

ध्यान दें कि यीशु ने “न्याय, और दया, और विश्वास” को “व्यवस्था की अधिक महत्वपूर्ण बातों” के रूप में संदर्भित किया, और उसने इनकी तुलना “पोदीने, और सौंफ, और जीरे का दसवाँ अंश” देने वाले कम महत्वपूर्ण विषयों के साथ की। एक बार फिर, उसने संकेत दिया कि उसके अनुयायियों को पुराने नियम की सभी आज्ञाओं को मानना था, लेकिन यह कि उन्हें सही प्राथमिकताओं को ध्यान में रखना था।

यह पुराने नियम में परमेश्वर के निर्देशों पर यीशु के दृष्टिकोण की कल्पना, एक मोबाइल के रूप में करने में मदद करता है। मोबाइल के शीर्ष पर आपके पास सार्वभौमिक सिद्धांत रहेंगे, अर्थात दो सबसे बड़ी आज्ञाएँ: “तू परमेश्वर अपने प्रभु से प्रेम रख” और “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।” “ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।”

इनके नीचे अतिरिक्त सिद्धांत लटकते हैं जो संकेत देते हैं कि कैसे इन सबसे बड़ी आज्ञाओं को मानना है। इनमें पुराने नियम में पाए जाने वाले कई सामान्य दिशा-निर्देश शामिल हैं जैसे कि दस आज्ञाएँ और न्याय, दया एवं विश्वासयोग्यता जैसे सिद्धांत।

इन व्यापक सिद्धांतों के नीचे “छोटी से छोटी आज्ञाएँ” लटकते हैं। पुराने नियम में ये अपेक्षाकृत विशिष्ट निर्देश हैं जो संकेत करते हैं कि कैसे विशेष परिस्थितियों में विभिन्न लोगों को उच्च आज्ञाओं को मानना है। उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था में आराधना के लिए निर्देश, भजन संहिता के निर्देश, और अय्यूब एवं नीतिवचन जैसी बुद्धि की पुस्तकों और यशायाह एवं यहेजेकेल जैसी भविष्यवाणी की पुस्तकों में पाए जाने वाले कई निर्देश।

मोबाइल के निचले भाग में, कई ऐसे ऐतिहासिक उदाहरण हैं जो अक्सर पुराने नियम की कहानियों और भजन में और साथ में ज्ञान की पुस्तकों में सबसे अधिक बार दिखाई देते हैं। ये अनुच्छेद उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनमें विशेष पुरुषों एवं महिलाओं ने अपनी विशिष्ट परिस्थितियों में या तो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया या उनकी अवज्ञा की।

यह पदानुक्रमित व्यवस्था हमें कई पहलूओं को समझने में मदद करती है कि यीशु कैसे चाहते थे कि उनके शिष्य उन निर्देशों की पूरी श्रृंखला के साथ कार्य करें जो पुराने नियम में दिखाई देते हैं।

पुराने नियम की इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, आइए नए नियम में बाइबल के निर्देशों की विविधता पर विचार करें।

नया नियम

सभी के लिए यह देखना आसान है कि नया नियम पुराने नियम से बहुत छोटा है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि नए नियम के लेखकों ने परमेश्वर के लोगों के लिए निर्देशों की संख्या कम कर दिया है। वास्तव में, प्रारंभिक कलीसिया के लिए निर्देशों की सूची वास्तव में प्राचीन इस्राएल के लिए सूची से अधिक लंबी थी। नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम को प्रतिस्थापित नहीं किया। बल्कि उन्होंने पुराने नियम में जोड़ा। अब, नए नियम में और निर्देशों को शामिल करना एक महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाता है। नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के निर्देशों में स्वयं अपने निर्देशों को क्यों जोड़ा?

जैसा कि हमने पहले के एक अध्याय में देखा था, नए नियम के लेखक नहीं चाहते थे कि मसीह के अनुयायी किसी भी पुराने नियम के निर्देश को भूल जाएं, लेकिन वे यह भी नहीं चाहते थे कि वे ऐसे रहें जैसे कि वे पुराने नियम के समयों में थे। इसलिए, अपने श्रोताओं को अतीत के मार्गों में फिसलने से रोकने के लिए, उन्होंने प्रारंभिक कलीसिया को यह सिखाया कि नई वाचा वाले युग में पुराने नियम के निर्देशों को कैसे लागू करना है।

नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के निर्देशों को इस समझ के साथ माना, कि जब यीशु पहली बार आया, तो वह परमेश्वर के मसीहा वाले राज्य के उद्घाटन को लाया था। उन्होंने यह भी महसूस किया कि जब पवित्र आत्मा नई वाचा के युग की निरंतरता में परमेश्वर के राज्य का विस्तार करती है तो पुराने नियम के निर्देशों को पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से देखा जाना चाहिए। और जब मसीह महिमा में लौटता है तो वह जो कुछ मसीहा के राज्य की अंतिम संपूर्णता में करेगा, उसके संदर्भ में उन्होंने पुराने नियम को देखा था।

इन सब के दौरान, नए नियम के लेखकों ने इस बात पर जोर दिया कि मसीह के अनुयायियों को यीशु के द्वारा स्थापित प्राथमिकताओं को बनाए रखना चाहिए।

पहले स्थान पर, परमेश्वर के लिए प्रेम और पड़ोसी के लिए प्रेम के सार्वभौमिक सिद्धांत, सबसे बड़ी आज्ञाओं के रूप में बने रहे, जैसा कि हम लूका 10:27, 1 कुरिन्थियों 13:13 और 1 यूहन्ना 4:21 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं। चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए, परमेश्वर के प्रति प्रेम करने और अपने पड़ोसियों को प्रेम करने के लिए नए नियम के विश्वासियों को अपना हृदय लगाना है।

दूसरे स्थान पर, नए नियम के लेखकों ने मत्ती 19:18 और रोमियों 13:8-10 जैसे अनुच्छेदों में पुराने नियम में दस आज्ञाओं एवं अन्य सामान्य दिशा-निर्देशों के लिए भी ध्यान देने के लिए बुलाहट दी।

तीसरे स्थान पर, नए नियम के लेखकों ने विशिष्ट लोगों एवं परिस्थितियों के लिए विशिष्ट निर्देशों को दिया जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 14 और 2 तीमुथियुस 4:1-5 में पढ़ते हैं।

और चौथे स्थान पर, हम ऐसे लोगों के कई ठोस ऐतिहासिक उदाहरणों को देखते हैं जिन्होंने सुसमाचारों एवं प्रेरितों के काम की पुस्तक एवं कई अन्य अनुच्छेदों में परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया और अवज्ञा की।

जैसा कि हमने देखा, पवित्र शास्त्र की विषय-वस्तु इतनी जटिल है, और बाइबल में परमेश्वर के लोगों के लिए इतने सारे अलग-अलग निर्देश हैं, कि शायद हम अपने दिमाग में हर निर्देश को आगे नहीं रख सकते हैं। लेकिन नया नियम हमें यह देखने में मदद करता है कि हमें इन विभिन्न आज्ञाओं को कैसे संचालित करना चाहिए।

एक ओर, हमें उन प्राथमिकताओं को बनाए रखने की आवश्यकता है जिन्हें यीशु ने अपने शिष्यों को मानना सिखाया। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हम पवित्र शास्त्र की बारीकियों में खो सकते हैं, जैसा कि फ़रीसियों ने यीशु के दिनों में किया था। जब हम विशेष विषयों के साथ कार्य करते हैं तो विशिष्ट निर्देश महत्वपूर्ण हैं, लेकिन हमारा अधिक ध्यान महत्वपूर्ण विषयों के लिए दिया जाना चाहिए — अर्थात सबसे

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ऊपर परमेश्वर एवं पड़ोसी से प्रेम करना। प्रत्येक दिन के हर पल हमें इन दो सबसे बड़ी आज्ञाओं से प्रेरित एवं निर्देशित होना चाहिए।

दूसरा, इन प्राथमिकताओं के बावजूद, हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि, किसी न किसी तरीके में, बाइबल का हर एक निर्देश मसीह के प्रत्येक अनुयायी के लिए प्रासंगिक है। जब हम विभिन्न प्रकारों के विकल्पों का सामना करते हैं, तो हमें न सिर्फ पवित्र शास्त्र के सार्वभौमिक सिद्धांतों, बल्कि जब हम ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं तो उन कई सामान्य दिशा-निर्देशों, विशिष्ट विस्तृत निर्देशों और ठोस उदाहरणों से भी से सीखना चाहिए जिन्हें हम बाइबल में पाते हैं।

> वाचा में, जब परमेश्वर अपने लोगों को अपने स्वभाव एवं चरित्र को सिखा रहा है, तो वह तीन प्रकार की व्यवस्था देता है। उसमें नैतिक व्यवस्थाएं हैं, जिन्हें बस परम सिद्धांत के रूप में बताया गया है, और ये सभी हर समयों के लिए हैं। उसमें नागरिक कानून हैं जिनमें शाश्वत सिद्धांतों को निर्धारित-समय की परिस्थिति में रखा गया है। मैं हमेशा सींग मारने वाले बैल के कानून का उपयोग हूबहू करना पसंद करता हूँ क्योंकि मेरे पास कोई बैल नहीं है। मुझे ऐसे कानून पसंद हैं जो मेरे लिए लागू नहीं होते हैं। वहाँ सिद्धांत यह है, कि यदि आप ऐसे बैल को जानते हैं जो गुस्सैल है और उसे पकड़ कर नहीं बाँधते हैं, और वह आपके पड़ोसी को मार देता है, तो आप हत्यारे हैं। दूसरी ओर, यदि आपके पास कभी भी उस बैल के विनम्र स्वभाव पर प्रश्न करने का कोई कारण नहीं था, और आप उसे नहीं बाँधते हैं, और एक दिन वह उत्तेजित हो जाता है और आपके पड़ोसी को मार डालता है, तो आप जिम्मेदार नहीं हैं। मेरे पास बैल नहीं है; मेरे पास कार जरूर है। यदि मैं जानता हूँ कि ब्रेक खराब है और उस विषय में कुछ नहीं करता हूँ, और मैं आपको मार डालता हूँ, तो जहाँ तक बाइबल का प्रश्न है मैं एक हत्यारा हूँ। तो सिद्धांत क्या है? सिद्धांत यह है कि जानकारी जिम्मेदारी है। इसलिए, नागरिक कानूनों में, मुझे सिद्धांत को निकालना होगा और इसे स्वयं अपने जीवन में लागू करना होगा। तीसरे प्रकार की व्यवस्था आनुष्ठानिक है, और मूल रूप से यह आराधना के रूपों के लिए लागू होते हैं, और वस्तु सबक के रूप में परमेश्वर इनका उपयोग शाश्वत सत्य को सिखाने के लिए कर रहा है। इस तरह, उदाहरण के लिए, वह कहता है, सुअर मत खाओं क्योंकि यह तुम्हें अशुद्ध कर देगा। खैर, सुअर हमें अशुद्ध नहीं बनाता है। यीशु इसे एकदम स्पष्ट करते हैं। यह वह नहीं है जो आपके मुंह में जाता है जो आपको अशुद्ध बनाता है। यह वह है जो आपके अशुद्ध हृदय से निकलता है। तो, प्रश्न यह नहीं है, कि, "क्या आप सुअर का मांस खाते या नहीं?" प्रश्न यह है, कि क्या आपने पवित्र आत्मा के माध्यम से मसीह को अपने अशुद्ध हृदय पर कार्य करने की अनुमति दी है? इसलिए, नहीं, मैं आनुष्ठानिक नियमों का पालन नहीं करता हूँ। ये वस्तु सबक हैं। एक बार जब आप सबक सीख जाते हैं, तो आपको वस्तुओं की आवश्यकता अब और नहीं होती है।
>
> — डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

> जब आप उन आज्ञाओं की ओर देखते हैं जो पवित्र शास्त्र में पाए जाते हैं, तो आप महसूस करना शुरू करते हैं कि वहाँ कई कारणों के लिए दी गई आज्ञाओं का समूह है ... जब आप प्रेरितों के काम में पाए जाने वाली यरूशलेम की महासभा को लेते हैं, तो जब यह प्रश्न उठता है, "मूसा वाली वाचा की आज्ञाओं के संबंध

में अन्यजातियों को क्या करना चाहिए?" इस्राएल की कलीसिया के अगुवे एकदम स्पष्ट थे। उन्होंने कहा, "हम उनके गरदन पर ऐसा जूआ नहीं डालेंगे जिसे स्वयं हम नहीं उठा सकते हैं, लेकिन हम यह जरूर कहते हैं कि इनसे दूर रहो ..." और फिर उन्होंने उन बातो की एक सूची दी — कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के मांस से और लहू से दूर रहें। इन सभी का किसी न किसी तरह से उस मूल विश्वास के साथ कुछ लेना-देना है जो उसके केंद्र में जाता है जिसकी माँग परमेश्वर हमसे नैतिक रूप में करता है। इसलिए, यहाँ तक कि पवित्र शास्त्र में भी हम परमेश्वर की आज्ञाओं को अलग तरह से मानने का एक तरीका देखते हैं क्योंकि इस्राएल की वाचा में आपके पास एक तरह की आज्ञा है, लेकिन वाचा की ये सभी आज्ञाएँ हमारे जीवन के बारे में केंद्रिय नैतिक चिंता तक नहीं जाती हैं जिन्हें परमेश्वर वास्तव में चाहता है। और अंत में, जब इस प्रश्न के साथ स्वयं यीशु से संपर्क किया गया कि, कौन सी दो सबसे बड़ी आज्ञाएं हैं, तो यीशु ने भी कहा, यदि आप सभी चीज़ों का सार निकालना चाहते हैं, तो निष्कर्ष यह है, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

— डॉ. स्टीव ब्लेकमोर

यह देखने के बाद कि पवित्र शास्त्र के व्यक्तिगत अनुप्रयोग में विविधता बाइबल के निर्देशों की विविधता से कैसे संबंधित है, आइए एक दूसरे कारक पर ध्यान दें जो अनुप्रयोग में विविधता लाता है: यानी इसमें शामिल विभिन्न लोग और परिस्थितियाँ। हम उस बात की समीक्षा करने के द्वारा शुरू करेंगे जिसे हमने एक पूर्ववर्ती अध्याय में देखा था।

लोग और परिस्थितियाँ

जैसा कि आपको याद होगा, परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र के माध्यम से और सामान्य प्रकाशन के माध्यम से अपनी इच्छा को प्रकट करने के द्वारा सांस्कृतिक विविधता की ओर सदैव अपने लोगों की अगुवाई की — लोगों और परिस्थितियों में स्वयं के और अपनी इच्छा के उसके खुलासे। इस रीति से, परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए सांस्कृतिक विविधता की कुछ मात्रा को निर्धारित किया।

कई मायनों में, हमारे व्यक्तिगत जीवनों के लिए भी इसी तरह की बात सच है। पवित्र शास्त्र में निहित कई विविध निर्देशों के माध्यम से परमेश्वर अपनी इच्छा को प्रकट करता है, लेकिन इन निर्देशों को दूसरों एवं स्वयं पर लागू करने के लिए, हमें विभिन्न प्रकार के लोगों और परिस्थितियों में परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन को ध्यान में रखना चाहिए।

यीशु के निर्देशों के पदानुक्रम में वापस लौटने के द्वारा, हम देख सकते हैं कि लोगों और परिस्थितियों के बीच विविधताएं व्यक्तिगत अनुप्रयोग को कैसे प्रभावित करती हैं। सरलता के लिए, हम निर्देशों की अपनी चार श्रेणियों को "उच्च" या बाइबल के अधिक सामान्य निर्देश और "निचले" या बाइबल के अधिक विशिष्ट निर्देशों में विभाजित करेंगे। आइए बाइबल के उच्च निर्देशों के साथ शुरू करें।

उच्च निर्देश

बाइबल के उच्च निर्देशों में सार्वभौमिक सिद्धांत और सामान्य दिशा-निर्देश दोनों शामिल हैं। जैसा कि हमने देखा, इन प्रकार के निर्देशों की प्राथमिकता दूसरों के ऊपर है क्योंकि वे अधिक व्यापक रूप से

लागू होते हैं। लेकिन फिर भी, परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन को ध्यान में रखते हुए उन्हें भी लागू किया जाना चाहिए।

एक ओर, बाइबल के उच्चतर सिद्धांतों को लागू करने के लिए, हमें इसमें शामिल व्यक्ति की विशेषताओं का आंकलन करना चाहिए। हमें व्यक्ति की आत्मिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, योग्यताओं, उम्र और लिंग जैसी बातों का ध्यान रखना होगा। इन और अन्य विशेषताओं को जानने से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि पवित्र शास्त्र के उच्च सिद्धांतों को दृष्टिगत व्यक्ति की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को कैसे प्रभावित करना चाहिए।

कल्पना कीजिए कि मैं एक कमरे में जाता हूँ और दोस्तों के एक समूह से कुछ प्रश्न पूछता हूँ। सबसे पहले, मैं पूछता हूँ, “क्या आप मानते हैं कि हम सभी को सही काम करना चाहिए?” खैर, स्वाभाविक रूप से वे सब उत्तर देंगे, “निश्चित रूप से।” लेकिन फिर मैं दूसरे प्रश्न के साथ आगे बढ़ता हूँ, “ठीक है फिर, आज जब आप इस कमरे को छोड़ेंगे तो आप में से प्रत्येक क्या करने जा रहे हैं?” अब, हमें यह जानकर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं होगा कि प्रत्येक व्यक्ति सही काम करने जा रहा है, लेकिन अलग-अलग तरीके से। एक व्यक्ति कह सकता है कि, “मैं अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए घर जा रहा हूँ।” या, “मैं कुछ भोजन खरीदने के लिए दुकान जा रहा हूँ।” वास्तव में, हम स्तब्ध हो जाएंगे यदि उन सभी ने एकदम एक ही तरह से सही काम को करने की योजना बनाई हो। और इसे समझना कठिन नहीं है कि ऐसा क्यों। सामान्य निर्देश जैसे, “सही काम करो” को विभिन्न लोगों एवं परिस्थितियों में विविध तरीकों से लागू किया जाना चाहिए।

हमने पहले ही ध्यान दिया है कि लैव्यव्यवस्था 19:18 में सार्वभौमिक सिद्धांत “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख” एक ऐसा निर्देश है जो हर व्यक्ति के लिए हर परिस्थिति में लागू होता है। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर सब लोगों से एकदम एक ही तरह से इस आज्ञा को मानने की अपेक्षा नहीं करता है। एक व्यस्क प्रेम को किसी एक तरीके से दिखा सकता है, जबकि कोई छोटा बच्चा प्रेम को दूसरे तरीके से दिखाएगा। एक अमीर व्यक्ति और एक गरीब व्यक्ति भी अलग-अलग तरीकों से दूसरों के लिए प्रेम को दिखा सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की योग्यताएं, कमजोरियां, अनुभव, आत्मिक स्थिति और इत्यादि इस बात को प्रभावित करते हैं, कि पड़ोसी के प्रेम के सार्वभौमिक सिद्धांत को कैसे लागू किया जाना चाहिए।

दूसरी ओर, “तू अपने पड़ोसी से प्रेम रख” विभिन्न परिस्थियों में विविध तरीकों से भी लागू होता है। यहां तक कि वही व्यक्ति अलग-अलग समय में अपने पड़ोसी से अलग-अलग तरीके से प्यार कर सकता या कर सकती है। प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न बाधाओं, चुनौतियों और अवसरों का सामना करता है। और ये परिस्थितियाँ हम में से प्रत्येक से बाइबल के सिद्धांतों को उन तरीकों से लागू करने की मांग करती है जो अन्य परिस्थितियों में लोगों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, पड़ोसी के लिए प्रेम युद्ध और शांति के समय में, समृद्धि और तंगी के समय में, बीमारी और स्वास्थ्य के समय में अलग होता है। पवित्र शास्त्र के उच्च सिद्धांतों को हमारी परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न तरीकों से लागू किया जाना चाहिए।

यह देखने के बाद कि लोगों और परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार से बाइबल के उच्च निर्देशों को लागू करने के लिए हमें कैसे विविधता की आवश्यकता होती है, आइए अपने ध्यान को पवित्र शास्त्र में निर्देशों के यीशु के पदानुक्रम में निचली श्रेणी की बातों की ओर लगाए।

निचली श्रेणी के निर्देश

हमारे उद्देश्यों के लिए, निचली श्रेणी के निर्देशों में बाइबल के विशिष्ट, विस्तृत निर्देश और ठोस ऐतिहासिक उदाहरण शामिल हैं जो पवित्र शास्त्र को अपने लिए और दूसरों के लिए लागू करने में हमारी

मदद करते हैं। जिस तरह उच्च निर्देशों के साथ, वैसे ही निचले निर्देशों को इसमें शामिल लोगों और परिस्थितियों की विविधता के आधार पर अलग-अलग तरीकों से लागू किया जाता है।

उदाहरण के लिए, एक विशिष्ट निर्देश की कल्पना कीजिए जैसे, “अपने परिवार के लिए सुरक्षित घर बनाएं।” ठंडी जलवायु में रहने वाला व्यक्ति गर्म जलवायु में रहने वाले व्यक्ति की तुलना में अलग घर का निर्माण करेगा। तूफान वाले किसी क्षेत्र में किसी घर को भूकंप वाले क्षेत्र में घर की तुलना में अलग संरचनात्मक तत्वों की आवश्यकता होगी। यहाँ उच्च सिद्धांत यह है कि व्यक्ति को अपने परिवार को सुरक्षित रखना चाहिए। इस उच्च सिद्धांत को पूरा करने के लिए विशिष्ट निर्देश एक घर का निर्माण करने के लिए है। और घर बनाने वाला कोई भी व्यक्ति समान परिस्थितियों में एक जैसे घरों के उदाहरणों से लाभान्वित होगा। लेकिन कोई भी दो व्यक्ति बिल्कुल एक ही तरह से विशिष्ट निर्देश पर कार्य नहीं करेंगे।

कुछ-कुछ ऐसा ही हर समय तब होता है जब हम आज अपने व्यक्तिगत जीवन में बाइबल के किसी अपेक्षाकृत विशिष्ट निर्देश को लागू करते हैं। सबसे पहले, हम उच्च निर्देशों को तथा साथ में अन्य निकटता से संबंधित उन विशिष्ट निर्देशों को ध्यान में रखते हैं, जो दृष्टिगत शिक्षण की ओर हमें उन्मुख करते हैं। दूसरा, हम ऐसे लोगों और परिस्थितियों की पहचान करते हैं जो मूल रूप से विशिष्ट निर्देश द्वारा प्रभावित हुए। और तीसरा, यह समझने के लिए कि हमें इसे अपने ऊपर कैसे लागू करना चाहिए, हम विशिष्ट शिक्षण के मूल श्रोताओं के साथ स्वयं अपने जीवनों की तुलना करते हैं।

> बाइबल के विशिष्ट अभिलक्षणों में से एक यह है कि यह विशिष्ट समय में विशिष्ट स्थानों पर विशिष्ट लोगों के लिए लिखा गया है। यह वास्तव में एकमात्र ऐसी पवित्र पुस्तक है जो ऐसा करती है। संसार की अन्य धार्मिक पुस्तकें इस बारे में सिर्फ नुस्खे, कथन मात्र हैं कि लोगों को क्या करना या क्या नहीं करना चाहिए। लेकिन परमेश्वर ने अपनी भलाई में हमें संदर्भ दिया है। उसने हमें इसे समझने का एक तरीका दिया है कि जीवन में इस प्रकार की चीजें कैसे काम करती हैं। लेकिन इसका अर्थ यह है कि हमें हमेशा यह कहते रहना होगा, “अब इस संदर्भगत परिस्थिति में कौन सा सिद्धांत हैं जो सिखाया जा रहा है? और यह सिद्धांत मेरे नए संदर्भगत परिस्थिति में कैसे लागू होता है?”
>
> — डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

यह समझाने के लिए कि हमारे मन में क्या है, इस पर विचार करें कि निर्गमन 21:23-25 को हमें आज व्यक्तियों के लिए कैसे लागू करना चाहिए। इन पदों में हम पढ़ते हैं कि इस्राएल में न्यायियों को इस तरह से निर्णय देने थे:

> परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुँचे, तो प्राण के बदले प्राण का, और आँख के बदले आँख का, और दाँत के बदले दाँत का, और हाथ के बदले हाथ का, और पाँव के बदले पाँव का, और दाग के बदले दाग का, और घाव के बदले घाव का, और मार के बदले मार का दण्ड हो (निर्गमन 21:23-25)।

लेकिन अब मत्ती 5:38-39 को सुनिए, जहाँ यीशु ने अपने अनुयायियों को अपने पहाड़ी उपदेश में उनके व्यक्तिगत जीवनों के लिए इस व्यवस्था को लागू करना सिखाया।

> तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, ‘आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।’ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे (मत्ती 5:38-39)।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि यीशु न्यायाधीशों और कानूनी प्रणालियों के लिए पुराने नियम के शिक्षण से असहमत नहीं था। हम सभों के समान, यीशु जानता था कि न्यायालय में परमेश्वर और पड़ोसी के लिए प्रेम न्यायोचित निर्णय की मांग करता है। जिस समस्या का सामना यीशु ने किया वह यह थी, कि फरिसियों ने न्यायाधीशों वाले इस निर्देश को व्यक्तिगत संबंधों में बदला लेने को औचित्य ठहराने के रूप में लिया था। लेकिन जब हम पवित्र शास्त्र के उच्च सिद्धांतों और अन्य निचले निर्देशों के साथ इस निर्देश की तुलना करते हैं, तो हम समझ सकते हैं कि यीशु ने अपने शिष्यों को यहाँ क्या सिखाया। वास्तव में, यीशु ने अप्रत्यक्ष रूप में निर्गमन 21 के मूल श्रोताओं के साथ स्वयं की तुलना के लिए अपने अनुयायियों का आह्वान किया। प्रत्येक व्यक्ति को कानूनी प्रणालियों के लिए न्याय और निष्पक्षता का समर्थन करना चाहिए। और जब हमारे पास ऐसी भूमिकाएँ होती हैं जो किसी न्यायाधीश के समान होती हैं, तो हमें अदालत में न्यायाधीश के समान ही निर्गमन 21 को लागू करना चाहिए। लेकिन हमें कभी भी अपने व्यक्तिगत संबंधों में न्यायाधीशों के समान व्यवहार नहीं करना है। हमारे सामान्य, व्यक्तिगत संबंधों को केवल न्याय द्वारा निर्देशित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि जितना संभव हो सके दया और करुणा के द्वारा।

एक अन्य उदाहरण के रूप में, मत्ती 19:21 में यीशु ने धनवान युवा शासक को यह निर्देश दिया:

> जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा (मत्ती 19:21)।

इस पद का वृहत संदर्भ यह स्पष्ट करता है कि यीशु ने इस निचले निर्देश को इसलिए दिया क्योंकि वह अमीर युवा शासक अपने धन से इतना प्रेम करता था कि उसने परमेश्वर और पड़ोसी के लिए प्रेम के उच्च सिद्धांतों का उल्लंघन किया था। और उसने धन के लिए प्रेम को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाया था।

लोग कभी-कभी आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि क्या यह अनुच्छेद मांग करता है कि आधुनिक संसार में हर अमीर व्यक्ति को अपनी संपत्ति बेचनी है और उसे कंगालों को देना है। लेकिन हमें व्यक्तिगत संपत्ति और धन के बारे में पवित्र शास्त्र के उच्च सिद्धांतो को ध्यान में रखना चाहिए। हमें इस निचले, व अधिक विशिष्ट शिक्षा की तुलना उन दूसरी शिक्षाओं के साथ भी करनी चाहिए, जिन्हें यीशु और नए नियम के लेखकों ने संपत्ति के संबंध में दी। तो, हम कैसे तय करें कि अमीर लोगों को अपने धन के साथ क्या करना चाहिए? अमीर युवा शासक के साथ आज व्यक्तियों और उनकी परिस्थितियों की तुलना करने में इसका उत्तर निहित है। जितना अधिक हम उसके समान बनते हैं, उतना ही अधिक हमारे आधुनिक अनुप्रयोग को भी उसी के समान होना चाहिए जो उसे अपने दिनों में करना था।

एक-एक व्यक्ति के लिए आधुनिक अनुप्रयोग पर इस अध्याय में अभी तक हमने देखा कि, एक स्तर से या दूसरे तक, व्यक्तिगत अनुप्रयोग में विविधता के कारण आधुनिक व्यक्तियों को अलग-अलग तरीके से पवित्र शास्त्र को कैसे लागू करना चाहिए। यह हमें हमारे दूसरे प्रमुख विषय की ओर ले जाता है: अनुप्रयोग में बुद्धि की हमारी आवश्यकता।

बुद्धि

संसार के कई हिस्सों में, मसीही लोग बाइबल को उठा सकते हैं और जिस किसी भी समय वे चाहें इसे पढ़ सकते हैं। और यह जितना भी प्रशंसनीय है, लेकिन इसने हममें से कई लोगों को उन तरीकों में अत्यधिक चयनात्मक बना दिया है जिनमें हम पवित्र शास्त्र को अपने व्यक्तिगत जीवनों के लिए लागू करते हैं। हम इस सिद्धांत में पुष्टि करते हैं कि सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लेकिन विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग लोगों के लिए बाइबल के कई निर्देशों के साथ कार्य करने के बजाय, हम सिर्फ पवित्र शास्त्र में निजी तौर पर चुनाव करते हैं और कुछ ऐसा खोजते हैं जो आसानी से हमारे जीवनों पर लागू होता है। यह व्यापक आदत समझने योग्य है क्योंकि कई बार बाइबल बहुत जटिल होती है। लेकिन वास्तविकता में, बाइबल को इस तरह से उपयोग किए जाने के लिए नहीं लिखा गया था। इसके बजाए, परमेश्वर ने ठहराया कि पवित्र शास्त्र को ऐसे पढ़ा जाए जैसे उसके लोग एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। अन्य लोगों की मदद से, हम उस बुद्धि को प्राप्त कर सकते हैं जिसकी आवश्यकता हमें बाइबल के कठिन हिस्सों को अपने जीवनों में लागू करने के लिए पड़ती है।

जैसा कि हम देखेंगे, भले ही पवित्र आत्मा हमें पवित्र शास्त्र के अनुप्रयोग में असाधारण अंतर्दृष्टि दे सकता है, फिर भी परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से ठहराया है कि, सामान्य रूप से, हमें दूसरों के साथ बातचीत करने के द्वारा अनुप्रयोग में बुद्धि को प्राप्त करना है।

प्राचीन इस्राएलियों एवं आरंभिक कलीसिया के पास न कोई प्रिंटिंग प्रेस थी, न कोई प्रकाशन कंपनी, व पवित्र शास्त्र के सामूहिक वितरण के लिए कोई साधन नहीं था जैसा कि आज हमारे पास है। और यदि पवित्र शास्त्र, अधिकांश लोगों के पास तक पहुँच भी गए थे, तो भी वे उन्हें पढ़ने में सक्षम नहीं हो पाए होंगे। इसलिए, परमेश्वर ने एक-एक व्यक्ति से यह सीखने की अपेक्षा की, कि समुदाय में एक दूसरे के साथ बातचीत के द्वारा पवित्र शास्त्र को कैसे लागू करना है।

हम उन दो तरीकों का पता लगाएंगे जिनमें व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बुद्धि दूसरों के साथ बातचीत के माध्यम से विकसित होती है। सबसे पहले, हम पवित्र शास्त्र के प्राथमिक प्राप्तकर्ता के रूप में परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों की महत्वपूर्ण भूमिका को देखेंगे। दूसरा, हम परमेश्वर के लोगों में पवित्र शास्त्र के प्रसार, या विस्तार में समुदाय की आवश्यकता का पता लगाएंगे। आइए पहले व्यक्तिगत अनुप्रयोग में अगुवों की महत्वपूर्ण भूमिका को देखें।

अगुवे

हालांकि सुसमाचारीक लोग आमतौर पर बाइबल को व्यक्तिगत विश्वासियों के लिए लिखी गई पुस्तक के रूप में मानते हैं, कई संकेतक बताते हैं कि बाइबल के लेखकों ने एक बहुत ही अलग दृष्टिकोण के साथ लिखा था। इस्राएल में और शुरूआती कलीसिया में सभी लोगों को सीधे लिखने के बजाय, पवित्र शास्त्र के लेखकों ने पहले परमेश्वर के लोगों के उन अगुवों को लिखा था जिन्हें पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं को समझाने और प्रसारित करने के लिए ठहराया गया था।

हम सबसे पहले देखेंगे कि बाइबल ने पुराने नियम में अगुवों को मुख्य रूप से कैसे संबोधित किया और फिर यह भी कि नए नियम में यह कैसे हुआ। आइए पुराने नियम के साथ शुरू करें।

पुराना नियम

पुराने नियम में, आमतौर पर याजक, लेवी, भविष्यद्वक्ता, संत, न्यायाधीश, राजा और अन्य रईस लोग ही पवित्र शास्त्र को सबसे पहले पढ़ और उसका अध्ययन सकते थे। इस कारण से, पुराने नियम के लेखकों ने मुख्य रूप से इस्राएल के अगुवों को संबोधित किया। इसका प्रमाण हम कम से कम तीन तरीकों से देख सकते हैं।

पहले स्थान पर, पुराने नियम की पुस्तकों के प्राथमिक प्राप्तकर्ता के रूप में इस्राएल के अगुवों के लिए कई स्पष्ट संदर्भ हैं।

सिर्फ कुछ उदाहरणों का उल्लेख करने के लिए, व्यवस्थाविवरण 31:9 और 2 राजा 22:8-10 जैसे अनुच्छेद इंगित करते हैं कि मूसा की व्यवस्था को लेवी याजकों की देखरेख में रखा गया था। और निर्गमन 21:1–23:9 में वाचा की पुस्तक में दिए गए कई निर्देशों को “नियम” कहा गया — इब्रानी में

मिशपतिम — क्योंकि उन्हें न्यायाधीशों के लिए अपने न्यायालय में लागू करने के लिए न्यायिक कानून के रूप में लिखा गया था। और नीतिवचन 1:1 एवं 25:1 जैसे पदों में, परिचयात्मक जानकारी देने वाले सरनामा हमें दिखाते हैं कि यहूदा के शाही दरबार में उपयोग के लिए नीतिवचनों को उच्च श्रेणी के बुद्धिमान पुरुष और शाही व्यक्तियों द्वारा एकत्रित किया जाता था। ये एवं कई अन्य संदर्भ संकेत देते हैं कि इस्राएल के अगुवों को पहले ध्यान में रखकर पुराने नियम की पुस्तकों को लिखा गया था।

दूसरे स्थान पर, पुराने नियम के पुस्तकों की विषय-वस्तु यह भी बताती है कि उन्हें मुख्य रूप से इस्राएल के अगुवों के लिए लिखा गया था।

पुराने नियम की कई पुस्तकें उन विषयों पर बहुत समय बिताती हैं जिनकी प्रत्यक्ष प्रासंगिकता अधिकांश इस्राएलियों के दैनिक जीवन के लिए बहुत कम थी। उदाहरण के लिए, 1 राजा 6 में मंदिर के निर्माण से संबंधित लंबे निर्देश इस्राएल के सामान्य चरवाहे, किसान या शिल्पकार के जीवन से सिर्फ अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित थे। बहुत कुछ इसी तरह से, धन, सुख, प्रसिद्धि और इसी तरह के अन्यों का पीछा करने की निरर्थकता पर सभोपदेशक में विचार उन चुनौतियों से कोसों दूर थे जिनका सामना इस्राएली पुरुष एवं महिलाओं की बड़ी संख्या कर रही थी। इस्राएल में हर व्यक्ति के सामने आने वाली आवश्यकताओं एवं चुनौतियों पर सीधे बात करने वाले निर्देशों को देने की बजाय, पुराने नियम की पुस्तकों की अधिकांश विषय-वस्तु इस्राएल के अगुवों के सामने आने वाली आवश्यकताओं और चुनौतियों के लिए अधिक प्रत्यक्ष रूप में प्रासंगिक थी।

तीसरे स्थान पर, पुराने नियम की पुस्तकों की जटिलताएं भी प्रकट करती हैं कि वे मुख्य रूप से इस्राएल में ऐसे अगुवों के लिए लिखी गई थीं जो प्रतिभावन, अनुभवी और बुद्धिमान थे।

यह भी सुनिश्चित रहे, कि पुराने नियम के कई हिस्से बच्चों के समझने के लिए भी बहुत सरल थे। लेकिन पुराने नियम से परिचित कोई भी व्यक्ति जानता है कि पुराने नियम की कई पुस्तकों की जटिलताएं सबसे अधिक विशेषज्ञ पाठकों को भी चुनौती देती हैं। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, यशायाह और यिर्मयाह जैसी भविष्यवाणी की पुस्तकों को इतनी पेचीदा रीति से निर्मित किया गया है कि एक औसत इस्राएली व्यक्ति ने उन्हें विस्मयकारी पाया होगा। कुल मिलाकर, यह स्पष्ट है कि पुराने नियम की पुस्तकें प्रत्यक्ष रूप से इस्राएल में प्रत्येक व्यक्ति को निर्देश देने के लिए नहीं, बल्कि मुख्य रूप से देश के अगुवों को निर्देश देने के लिए लिखी गई थीं।

कई मायनों में, जैसे कि इस्राएल के अगुवे पुराने नियम के लेखकों के पहले श्रोता थे, नए नियम के लेखकों ने भी कलीसिया में अगुवों के लिए अपनी पुस्तकों को लिखा जैसे प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पादरी, शिक्षक, प्राचीन, सेवक एवं अन्य प्रमुख लोग।

नया नियम

पहले स्थान पर, कुछ नए नियम की पुस्तकें कलीसिया के अगुओं को अपने प्राथमिक प्राप्तकर्ता के रूप में स्पष्ट संदर्भित करती हैं।

उदाहरण के लिए, 1 और 2 तीमुथियुस को पौलुस के "विश्वास में पुत्र" तीमुथियुस को संबोधित किया गया था। और तीतुस की पुस्तक को पौलुस के संरक्षक, तीतुस को संबोधित किया गया था। ये दोनों पुरुष आरंभिक कलीसिया में प्रभावशाली अनुवे बने।

> पौलुस के तीन पत्र हैं, जिन्हें चरवाही के पत्रों के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्हें पहली सदी में पादरियों को लिखा गया था, यानी तीमुथियुस और तीतुस को। इस तरह, 1 तीमुथियुस, 2 तीमुथियुस, और फिर तीतुस की पुस्तक ... इसलिए. यदि पौलुस विशेष रूप से इफिसुस से दूर है, तो वह उस व्यक्ति के बारे में बहुत चिंतित हो जाता है जिसे इफिसुस में कलीसिया की जिम्मेदारी दी गई है। वह कौन

> है? जवान तीमुथियुस। इसलिए, उसे प्रोत्साहन देने के लिए, इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए सामर्थ्य देने के लिए, वह 1 तीमुथियुस लिखता है। और वह तीतुस को भी लिखता है, यदि आप चाहें तो जो उसका "दूसरा पुत्र" है, और वह तीमुथियुस की तुलना में कुछ तरीकों से अधिक विश्वसनीय पात्र है, थोड़ा अधिक दृढ़, लेकिन फिर भी उसे उसके कार्य के लिए प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है, और उस समय उसका कार्य क्रेते के द्वीप पर कुछ मसीही विश्वासियों और उनकी समस्याओं को हल करना है। इसलिए, यह तीतुस को लिखित है। इसलिए मैं देखता हूँ कि ये दो पत्रियाँ पौलुस द्वारा अपनी यात्रा के दौरान अपने दो प्रमुख सहायकों, तीमुथियुस और तीतुस को लिखे गए थे, जब वह इकुनियुम से होकर युनान की ओर यात्रा कर रहा है।
>
> — डॉ. पीटर वॉकर

दूसरे स्थान पर, नए नियम की विषयवस्तु भी पहले प्राप्तकर्ताओं के रूप में कलीसिया के अगुवों को इंगित करती है।

जब हम नए नियम की पुस्तकों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में देखते हैं, तो यह देखना कठिन नहीं है कि अक्सर उन्होंने उन बातों पर ध्यान-केंद्रित किया जो कि पहली सदी के अधिकांश विश्वासियों के लिए अज्ञात थे। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, नए नियम की अनेक पुस्तकों को बड़े पैमाने पर अन्यजातियों की मंडलियों को लिखा गया था, ऐसे लोग जिन्हें पुराने नियम का बहुत कम ज्ञान था। फिर भी, नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के पाठ्यांशों को सैंकड़ों बार संदर्भित किया, और अक्सर बहुत कम स्पष्टीकरण के साथ। ऐसी बहुत संभावना है कि नए नियम के लेखकों ने बुद्धिमान अगुवों से यह अपेक्षा की कि वे इन और अन्य ऐसे निर्देशों को समझने में सक्षम होंगे जो कई शुरूआती मसीही लोगों के लिए अज्ञात थे।

तीसरे स्थान पर, नए नियम के निर्देशों की जटिलताएं यह भी संकेत देती हैं कि उनके प्राथमिक प्राप्तकर्ता शिक्षित एवं बुद्धिमान अगुवे थे।

हालांकि बहुत सारे नए नियम को आसानी से समझा जा सकता था, लेकिन शुरूआती मसीही लोगों के लिए कई भाग बहुत कठिन थे। यहाँ तक कि प्रेरित पतरस ने भी 2 पतरस 3:16 में प्रसिद्ध टिप्पणी की कि "[पौलुस के] पत्रों में कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है।" बारम्बार, नए नियम के लेखकों ने इस तरह के ईश्वरीय-ज्ञान की जटिलता के साथ लिखा, कि उनके पत्र अधिकांश सामान्य विश्वासियों की समझ से परे थे। और इस कारण से, कलीसिया के प्रतिभावान अगुवे उन लोगों को शिक्षा देने और समझाने के लिए जिम्मेदार थे, जो इन्हें स्वयं के लिए पढ़ और समझ नहीं सकते थे।

यह जानना कि परमेश्वर के लोगों के अगुवे बाइबल की पुस्तकों के प्राथमिक प्राप्तकर्ता थे, आधुनिक मसीहों के लिए कई निहितार्थ रखता है। कलीसिया के इतिहास ने पवित्र शास्त्र के उन दुरुपयोगों को दिखाया है जो तब पैदा हुए जब अलग-अलग विश्वासी अपने अगुवों पर बहुत अधिक निर्भर हुए हैं। लेकिन हमें सावधान रहना चाहिए कि दूसरे चरम पर न जाएं और यह मान लें कि हमें मसीही अगुवों की आवश्यकता नहीं है।

बहुत कुछ बाइबल के समय में पवित्र शास्त्र की अज्ञात विषयवस्तु और जटिलताओं से निपटने के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराए गए अगुवों के समान, इन्हीं कारणों से, मसीह के आधुनिक अनुयायियों को ऐसे अनुभवी अगुवों की आवश्यकता है, जो ज्ञान एवं बुद्धि के साथ पवित्र आत्मा द्वारा आशीषित हैं।

वास्तव में, हमारे हाथों में बाइबल भी — जिनमें इब्रानी, अरामी और यूनानी लेख भी शामिल है जिसे हम में से कुछ पढ़ते हैं — हमारे पास प्रमुख विद्वानों, के माध्यम से आते हैं, जो इन क्षेत्रों में अग्रणी

विशेषज्ञ हैं जैसे पाठ्यांश आलोचना, प्राचीन पाठ्यांश का समानुक्रम, संपादन और प्रकाशन। और इससे भी अधिक, पवित्र शास्त्र के आधुनिक अनुवाद जिसका उपयोग आज अधिकांश मसीही लोग करते हैं वह प्राचीन इब्रानी, अरामी और यूनानी और अनुवाद की कला में अग्रणी विशेषज्ञों के कार्यों का परिणाम है।

हालांकि पवित्र शास्त्र का निजी अध्ययन कई मायनों में मूल्यवान है, फिर भी जब हम आज अपने जीवनों में पवित्र शास्त्र को लागू करने की कोशिश करते हैं तो भरोसेमंद अगुवों की पहचान करने और उन वरदानों से लाभ उठाने का कोई और विकल्प नहीं है जो पवित्र आत्मा ने उन्हें दिए हैं।

> अगुवों को वास्तव में सभी बातों में उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए: प्रेम में, धार्मिकता में, प्रार्थना में, और निश्चित रूप से सिखाने में और सिद्धांत में। उसे विकास में एक उदाहरण होना चाहिए ... इस कारण से, प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस पर ध्यान-केंद्रित किया और उसे सलाह दी कि वह अपने जीवन में किसी से भी न डरे क्योंकि वह जवान है। फिर भी उसने उससे दूसरों के लिए एक उदाहरण बनने के लिए कहा। यह एक अगुवे के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है।
>
> — रेव्ह. योसेफ ऊराहमने, अनुवादित

हम सभी को इब्रानियों 13:17 में उद्‌बोधन को ध्यान में रखना चाहिए:

> अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं (इब्रानियों 13:17)।

यह देखने के बाद कि अनुप्रयोग में ज्ञान विकसित करने में परमेश्वर द्वारा के ठहराए गए अगुवों के साथ बातचीत शामिल है, आइए अपने दूसरे विषय को देखें: बाइबल शिक्षण के प्रसार एवं अनुप्रयोग में समुदाय की आवश्यकता।

समुदाय

इस्राएल और आरंभिक कलीसिया में साधारण व्यक्तियों की पवित्र शास्त्र तक सीधी पहुँच नहीं थी। इसलिए, उन्होंने पवित्र शास्त्र को अपने जीवनों के लिए किसी भी समय पर कैसे लागू किया? संक्षेप में, बाइबल के लेखकों ने इस अपेक्षा के साथ लिखा कि अगुवे पवित्र शास्त्र का प्रचार, या प्रसार करेंगे, ताकि परमेश्वर के लोग उन्हें एक साथ समुदाय में लागू कर सकेंगे।

यह देखने के द्वारा कि पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के समुदाय द्वारा पवित्र शास्त्र को कैसे साझा किया गया था, हम पवित्र शास्त्र के व्यक्तिगत अनुप्रयोग में समुदाय के महत्व को देखेंगे। और फिर हम यह पता लगाएंगे कि नए नियम में उनका प्रसार कैसे किया गया था। आइए पुराने नियम के साथ शुरू करें।

पुराना नियम

जब पुराने नियम की बात होती है, तो हम जानते हैं कि कई कहानियाँ, नियम, नीतिवचन, भजन, भविष्यद्वक्ताओं के उपदेश इत्यादि को बाइबल की पुस्तकों में जमा करने से पहले मौखिक रूप से

प्रसारित किया गया था। लेकिन इस अध्याय में, हम इस बात में ज्यादा रुचि रखते हैं कि इन शिक्षाओं के लिखित रिकॉर्ड उन अगुवों से आगे कैसे प्रसारित हुए जिन्होंने इन्हें सबसे पहले पढ़ा था।

ऐसे कई सुराग हैं जो हमें यह समझने में मदद करते हैं कि पुराने नियम की पुस्तकों की विषय-वस्तु को इस्राएल के बाकी बड़े समुदाय के भीतर कैसे वितरित किया गया था। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 31:9-29 में, मूसा ने लेवी याजकों को सबसे पहले परमेश्वर की व्यवस्था दी। मूसा ने फिर लेवी याजकों को निर्देश दिया कि वे झोपड़ीवाले पर्व पर व्यवस्था को पढ़ें ताकि पुरुष, महिलाएं और बच्चे व्यवस्था को सुन और सीख सकें। इसके अलावा, परमेश्वर ने मूसा को यह भी आज्ञा दी कि वह व्यवस्था की आशीषों और अभिशापों को एक गीत में डाले, ताकि लोग इसे अपने लिए परमेश्वर की इच्छा के नियत गवाह के रूप में गा सकें।

इससे बढ़कर, व्यवस्थाविवरण 17:8-13 जैसे अनुच्छेद इंगित करते हैं कि इस्राएली न्यायालयों में लेवियों एवं न्यायाधीशों ने लोगों के लिए परमेश्वर की व्यवस्था को लागू किया और व्यवस्था के निहितार्थों के विषय में सामान्य लोगों को निर्देश दिए। और 1 राजा 3:16-28 राज-दरबार में एक ऐसी ही प्रथा को दर्शाता है। 2 राजा 23:1-3 संकेत देता है कि वाचा के नवीनीकरण के समय राजा ने उँचे स्वर में पवित्र शास्त्र को पढ़ा और व्यवस्था के परिपालन का निर्देश दिया। एज्रा 10:16 दिखाता है कि पितरों के घराने के मुख्य पुरुषों ने परमेश्वर के वचन को उन लोगों के जीवनों में लागू किया जिनकी उन्होंने सेवा की। निर्गमन 12:27 में, माता-पिता को अपने बच्चों को फ़सह के नियमों को सिखाने की आज्ञा दी गई थी। वास्तव में, व्यवस्थाविवरण 6:6-9 में मूसा के निर्देश दिखाते हैं कि व्यवस्था को हर एक अवसर पर बच्चों को सिखाया जाना था।

और निश्चित रूप से, जैसे-जैसे पवित्र शास्त्र के निर्देश इस्राएल के सामान्य आबादी तक पहुँचे, समुदाय के सदस्यों ने पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के बारे में जो वे जानते थे उसका पालन करने के लिए एक दूसरे को प्रोत्साहित किया।

पुराना नियम इस बात पर भी जोर देता है कि लोगों को परमेश्वर के वचन को अपने मनों में रखना था। इस कारण से, पुराने नियम के कई अंशों को याद करने के लिए डिज़ाइन किया गया प्रतीत होता है। लघु कहानियाँ, दस आज्ञाएँ, भजन संहिता और नीतिवचन, साथ ही भविष्यद्वक्ताओं के कई उपदेश, गीत और दृष्टांत इस्राएल के समुदाय द्वारा याद किए गए थे। इस तरह, परमेश्वर के वचन को याद करने एवं उसमें आनन्दित होने के द्वारा विश्वासपात्र व्यक्ति परमेश्वर के निर्देशों को अपने मनों में रख पाए थे। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में भजन 119:11-16 के वचनों को सुनिए:

> मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ। हे यहोवा, तू धन्य है; मुझे अपनी विधियाँ सिखा! ... मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से, ... हर्षित हुआ हूँ।... मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा, और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूँगा। मैं तेरी विधियों से सुख पाऊँगा; और तेरे वचन को न भूलूँगा (भजन 119:11-16)।

इस अनुच्छेद में, भजनकार ने समझाया कि परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रखने का क्या अर्थ है। वह "परमेश्वर की [चितौनियों] के मार्ग से, ... हर्षित हुआ [था]।" जब उसने इन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए लागू करने की कोशिश की, तो उसने "[परमेश्वर] के उपदेशों पर ध्यान किया [था]" और "[परमेश्वर] की विधियों से सुख पाया [था]।"

> मानव व्यक्तित्व की समग्रता पाप से प्रभावित है। और इसलिए मैं सोचता हूँ कि भजन 119 में, जब हमारे पास पवित्र शास्त्र को पढ़ने के तरीके का एक नमूना है, तो हमारे पास कई बार, बार-बार फिर से, भजनकार प्रार्थना करता है, "मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ ... मेरी आँखों को व्यर्थ

> वस्तुओं की ओर से फेर दे।" इस बात से अवगत होकर कि हम पवित्र शास्त्र को विकृत कर सकते हैं, जो हम चाहते हैं, उससे वह कहलवाने की कोशिश कर सकते हैं और अपने व्यवहार को सही ठहरा सकते हैं, पवित्र शास्त्र हमें परमेश्वर को खोजने का एक मॉडल देता है ताकि हम अपने हृदय और दिमागों को पापमय चीज़ों से दूर रखें ... इस तरह हम देखते हैं कि हमारे पाप प्रभु के साथ हमारे संबंधों को प्रभावित करते हैं, और परमेश्वर हमें दूसरों को क्षमा करने, और दूसरों के साथ उसी अनुग्रह के साथ बर्ताव करने के लिए कहता है जो वह हमें देता है।
>
> — डॉ. रॉबर्ट एल. प्लम्मर

अब जबकि हमने विचार कर लिया है कि पुराने नियम में पवित्र शास्त्र को फैलाने के लिए परमेश्वर के लोगों का समुदाय कितना महत्वपूर्ण था, आइए नए नियम में मानी गई इसी तरह की प्रथाओं को देखें।

नया नियम

बहुत हद तक, शुरूआती कलीसिया के समुदाय ने पहली सदी के आराधनलयों की प्रथाओं के समान पवित्र शास्त्र को प्राप्त करने के तरीके को प्रतिरूपित किया। पवित्र शास्त्र को पढ़ने और समझाने के लिए कलीसिया के अगुवे जिम्मेदार थे ताकि परमेश्वर का वचन पूरे समुदाय में फैल जाए। हम इस पैटर्न को लूका 4:14-29 में नासरत के एक आराधनालय में यीशु की एक सुप्रसिद्ध कहानी में देख सकते हैं। इन पदों में, लूका ने बताया कि यीशु आराधनालय में एक सभा में शामिल हुए थे। आराधनालय के अगुवों ने उन्हें एक पुस्तक सौंपी, और यीशु ने विनम्रतापूर्वक खड़े होकर यशायाह के उस अंश से पढ़ा जो उन्होंने उसे दिया था। फिर, परिचारक को पुस्तक वापस सौंपने के बाद, यीशु बैठ गए और यह समझाया कि उन्होंने जो वचन पढ़े थे वे उस सभा पर कैसे लागू होते हैं।

नए नियम के कई अंश संकेत देते हैं कि प्रारंभिक मसीही कलीसियाओं ने आराधनालय शिक्षण के इस पैटर्न का अनुकरण किया। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, कुलुस्सियों 4:16 में पौलुस के निर्देशों को सुनिए:

> जब यह पत्र तुम्हारे यहाँ पढ़ लिया जाए तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना (कुलुस्सियों 4:16)।

यहाँ हम देखते हैं कि पौलुस ने अपेक्षा की थी कि उसका पत्र कुलुस्सियों की मंडली में पढ़ा जाए और "लौदीकिया की कलीसिया — या मंडली — में भी पढ़ा जाए।" जैसा कि यह अनुच्छेद दिखाता है, नए नियम के लेखकों ने इस अपेक्षा के साथ लिखा कि कलीसिया के अगुवे कलीसिया की सभाओं में उनकी पुस्तकों को पढ़ेंगे और समझाएंगे।

हर व्यक्ति को बाइबल देने और उन्हें अपने दम पर अध्ययन करने के लिए घर भेजने के बजाय, आरंभिक मसीहों ने अपने अगुवों की देखरेख में पवित्र शास्त्र के सार्वजनिक वाचन-पठन और स्पष्टीकरण के माध्यम से पवित्र शास्त्र को मुख्य रूप से समुदाय में सीखा और लागू किया। और जब वे परमेश्वर के लोगों के बीच फैल गए तो परिवार के सदस्यों, दोस्तों और पड़ोसियों ने इन शिक्षाओं को लागू करने में एक दूसरे की मदद की।

बहुत कुछ पुराने नियम के जैसे, इस सामुदायिक संपर्क ने आरंभिक कलीसिया में विश्वासियों को व्यक्तिगत मनन के लिए सुसज्जित किया। आरंभिक मसीहों ने नए नियम की शिक्षाओं को याद किया और अपने व्यक्तिगत जीवनों के लिए उनके महत्व पर मनन किया। यही एक कारण है कि नए नियम में यीशु के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दृष्टांत और अन्य आसानी से याद किए गए शिक्षण शामिल हैं जैसे कि मत्ती 5 में धन्य वचन और मत्ती 6 में प्रभु की प्रार्थना। यह हमें समझने में मदद करता है कि क्यों कई अनुच्छेद आरंभिक मसीही भजन जैसे प्रतीत होते हैं जैसे कि फिलिप्पियों 2:6-11 और कुलुस्सियों 1:15-20। यह समझाता है कि क्यों 2 तीमुथियुस 2:11-13 में पौलुस के वचनों से ऐसा लगता है कि वे कलीसिया में सुप्रसिद्ध थे।

2 तीमुथियुस 2:7 में, प्रेरित पौलुस ने ध्यान-मनन के अभ्यास और परमेश्वर से पवित्र शास्त्र वाली अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का सीधा उल्लेख किया। उसने जो वहाँ पर लिखा उसे सुनिए:

> जो मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दे, और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा (2 तीमुथियुस 2:7)।

जो उसने लिखा था "उस पर ध्यान देने" के लिए पौलुस तीमुथियुस से कहता है। और पौलुस ने अपेक्षा की, कि "प्रभु [तीमुथियुस को] सब बातों [की] समझ देगा।" ध्यान के माध्यम से, प्रभु तीमुथियुस को पौलुस के प्रेरित वचनों के महत्व को सिखाएगा ताकि तीमुथियुस उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में लागू कर सके।

जैसा कि हमने देखा, प्राचीन इस्राएलियों और आरंभिक मसीहों ने अपने व्यक्तिगत जीवनों के लिए पवित्र शास्त्र को जिस तरह से लागू किया वह हमारे समय की सामान्य प्रथाओं से बहुत अलग था। इस्राएल और आरंभिक कलीसिया में अगुवों ने पहले पवित्र शास्त्र को प्राप्त किया और फिर उनके अंशों को परमेश्वर के लोगों के व्यापक समुदाय में प्रसारित किया। और दूसरों के साथ बातचीत करने के संदर्भ में, एक-एक व्यक्ति को पवित्र शास्त्र को सुनाना और उस पर इस अपेक्षा के साथ ध्यान करना था कि परमेश्वर उनके व्यक्तिगत जीवनों के लिए अनुप्रयोग में उनकी अगुवाई करेगा। तो, आज हमारे लिए इन प्रथाओं के क्या निहितार्थ हैं? वे उन तरीकों के बारे में क्या कहते हैं जिनमें हमें अपने व्यक्तिगत जीवनों के लिए पवित्र शास्त्र को लागू करना चाहिए?

कम से कम उन लोगों के लिए तीन निहितार्थ ध्यान में आते हैं जो अपने व्यक्तिगत जीवनों में पवित्र शास्त्र को लागू करने के लिए आवश्यक बुद्धि को प्राप्त करने की आशा करते हैं।

सबसे पहले स्थान पर, मसीह के आधुनिक अनुयायियों को यह सीखने की आवश्यकता है कि हम तक पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं को पहुँचाने के लिए हमें आत्मा द्वारा प्रतिभावान अगुवों की कितनी आवश्यकता है। हमने देखा कि बाइबल के मूल श्रोताओं को अपरिचित और जटिल शिक्षाओं में उनकी मदद करने के लिए उनके अगुवों की आवश्यकता थी। यदि यह बाइबल के दिनों में रहने वाले लोगों के लिए सच था, तो यह आज हमारे लिए निश्चित रूप से सच है। हम बाइबल को अपने हाथों में पकड़ सकते हैं, लेकिन जब हम पवित्र शास्त्र को अपने जीवनों के लिए लागू करने की कोशिश करते हैं तो हमें अभी भी हमारी मदद करने के लिए बुद्धिमान और अनुभवी अगुवों की आवश्यकता है।

दूसरे स्थान पर, जब हम पवित्र शास्त्र को लागू करने की कोशिश करते हैं, तो मसीह के आधुनिक अनुयायियों को बड़े मसीही समुदाय, मसीह की देह, के साथ परस्पर सहयोग करने के महत्व की पुनः-पुष्टि करने की आवश्यकता है। इस मायने में, एक पुरानी कहावत सही बैठती है। "आँखों के दो सेट एक से बेहतर हैं।" वास्तव में, तीन, चार, पांच ... एक हजार आँखों के सेट एक से बेहतर हैं। साधारण तथ्य यह है: किसी न किसी समय पर, मसीह के हर अनुयायी ने सोचा है कि एक विशेष अनुप्रयोग पूरी तरह से उपयुक्त था, लेकिन दूसरों के साथ बातचीत के माध्यम से पता चला कि ऐसा नहीं था। जब हमें याद आता हैं कि मसीह की देह उसके आत्मा का मंदिर है, तो हमें एहसास होता है कि जब आधुनिक मसीही लोग पवित्र शास्त्र को अपने व्यक्तिगत जीवनों में लागू करते हैं तो अन्य विश्वासपात्र मसीहों के साथ बातचीत करना उन सबसे बुद्धिमान चीज़ों में से एक है जिसको वे कर सकते हैं।

2 पतरस 3:16 में, प्रेरित पतरस, पौलुस के पत्रों के बारे में बात कर रहे हैं। वह पौलुस के बारे में कहते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं (2 पतरस 3:16)।
>
> इस पद के बारे में जो बात मुझे पसंद है उनमें से एक यह है कि यह हमें याद दिलाती है कि पवित्र शास्त्र में कुछ बातों को समझना बहुत कठिन है। ऐसा नही कि उन्हें समझना नामुमकिन है, लेकिन कुछ कठिन हैं, और यह कि पवित्र शास्त्र को विकृत करना संभव है, उस पर अपने साँचें को इस रीति से ढालना कि आप प्रेरित अर्थ के प्रति विश्वासयोग्य नहीं हैं। और यह हमारे लिए एक अच्छा अनुस्मारक है, है ना, कि हमें मसीह की देह की आवश्यकता है, क्योंकि पूरे नए नियम में, दोनों अंतर्निहित और स्पष्ट अपेक्षाएं हैं कि हम अन्य विश्वासियों के साथ एक साथ इकट्ठा होंगे। कई अनुच्छेद उन विभिन्न आत्मिक वरदानों के विषय में बात करते हैं जिन्हें परमेश्वर अपनी देह को देता है — 1 कुरिन्थियों 12–14, रोमियों 4, इफिसियों 4 में। इफिसियों 4 के अनुसार, परमेश्वर जिन वरदानों को मसीह की देह के लिए देता है, उनमें से एक पादरी और शिक्षक हैं। यह इस बात से इंकार नहीं है कि सभी मसीहों में पवित्र आत्मा है और उन्हें पवित्र शास्त्र को पढ़ने और समझने के लिए बुलाया गया है, लेकिन पवित्र शास्त्र को समझाने और यह देखने में हमारी मदद करने के लिए कि इसमें क्या है कुछ लोगों को विशेष रूप से योग्य बनाया गया है।
>
> — डॉ. रॉबर्ट एल. प्लम्मर

तीसरे स्थान पर, मसीह के आधुनिक अनुयायियों को पवित्र शास्त्र पर व्यक्तिगत, प्रार्थनापूर्वक ध्यान के अभ्यास को नवीनीकृत करने के द्वारा अनुप्रयोग में बुद्धि को प्राप्त करने की आवश्यकता है। भले ही अगुवों और मसीह के विस्तृत देह के साथ आपसी संपर्क महत्वपूर्ण है, फिर भी हर एक मसीही व्यक्ति को उसका हिसाब देना होगा जो उसने किया है। इस तरह, अंत में, व्यक्तिगत अनुप्रयोग, जैसा कि पौलुस ने इसे तीमुथियुस के सामने रखा, इसको कभी भी उस बात से अलग करके कम नहीं सोचना चाहिए जिसमें हम प्रभु से "[हमें] समझ देने" के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। प्रार्थनापूर्ण ध्यान के माध्यम से, परमेश्वर का आत्मा हमें अंतर्दृष्टि और हृदयरूपी विश्वास प्रदान करेगा कि हम पवित्र शास्त्र को उन तरीकों में लागू कर रहे हैं जो उसे भाता है।

> पढ़ना पवित्र शास्त्र के लिए अनावरित होना है, और यही शुरूआत करने का स्थान है; आपको यह करना है। लेकिन ध्यान-मनन पवित्र शास्त्र को अवशोषित करना है। और यह पवित्र शास्त्र का अवशोषण ही है जो जीवन के परिवर्तन की ओर ले जाता है जिसकी आशा हम परमेश्वर के वचन में हमारे दैनिक समय से करते हैं। और यह परमेश्वर को अनुभव करने में हमारी मदद करता है। यह ध्यान के माध्यम से ही है कि हम स्वाद लेते और देखते हैं कि प्रभु भला है। पृष्ठ पर जानकारी उस पल प्रभु के साथ भक्तिपूर्ण अनुभव बन जाती है और जीवन के परिवर्तन को लेकर आती है। और मेरा अनुभव है कि अधिकांश मसीही लोग, यहाँ तक कि बाइबल के सबसे अधिक समर्पित दैनिक पाठक भी, मनन नहीं करते हैं ... बाइबल को सिर्फ पढ़ना ही नहीं है; पवित्र शास्त्र पर मनन भी करना है।

— डॉ. डोनाल्ड एस. व्हिटनी

उपसंहार

एक-एक व्यक्ति के लिए आधुनिक अनुप्रयोग के इस अध्याय में, हमने स्वयं और व्यक्तियों के रूप में दूसरों के लिए पवित्र शास्त्र को लागू करने के दो पहलूओं पर विचार किया है। हमने देखा कि पवित्र शास्त्र के व्यक्तिगत अनुप्रयोग में विविधता को बाइबल के निर्देशों की विविधता और इसमें शामिल लोगों एवं परिस्थितियों की विविधता पर ध्यान देना चाहिए। और हमने यह भी पता लगाया कि हमारी मदद करने के लिए जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में प्रार्थनापूर्वक पवित्र शास्त्र पर मनन करते हैं, तो बाइबल के अनुप्रयोग में बुद्धि परमेश्वर द्वारा ठहराए गए अगुवों और परमेश्वर के लोगों के समुदाय के साथ आपसी संपर्क पर कैसे निर्भर करती है।

बाइबल परमेश्वर की ओर से एक अद्‌भुत उपहार है, हमारे विश्वास एवं जीवन की एकमात्र निर्विवाद नियमावली। परमेश्वर की सेवा में हमारे व्यक्तिगत अवधारणाओं, व्यवहारों एवं भावनाओं का मार्गदर्शन करने के लिए कोई भी अन्य मानक पर्याप्त नहीं है। पवित्र शास्त्र विविध प्रकार के निर्देशों से भरा हुआ है, जिनकी आवश्यकता हमें तब पड़ती जब हम जीवन की विविधताओं के साथ निपटारा करते हैं। और परमेश्वर ने भी हमें बुद्धि का मार्ग प्रदान किया है जिसकी आवश्यकता हमें एक दूसरे के साथ, समुदाय में, पवित्र शास्त्र को सीखने और लागू करने के लिए, हमें बुलाने के द्वारा पवित्र शास्त्र में, इस विविधता के साथ कार्य करने के लिए पड़ती है। यदि हम इन दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हैं, तो हम अपने जीवन के प्रत्येक दिन परमेश्वर की हमारी व्यक्तिगत सेवा में पवित्र शास्त्र को लागू करने के लिए बेहतर रीति से सुसज्जित होंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।